

नोबेल पुरस्कार विजेता विद्वान-वर्ष 2017

दिव्यांश श्रीवास्तव
छात्र, ला मार्टीनियर कॉलेज, लखनऊ-226001, उ0प्र0, भारत
divyansh_21@hotmail.com

प्राप्त तिथि-10.10.2017; स्वीकृत तिथि-20.10.2017

सार- प्रस्तुत लेख में वर्ष-2017 हेतु चिकित्सा, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, साहित्य, शांति एवं अर्थशास्त्र के क्षेत्रों में दिये जाने वाले नोबेल पुरस्कार विजेता विद्वानों एवं उनके योगदान का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

बीज शब्द- नोबेल पुरस्कार विजेता विद्वान, चिकित्सा, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, शांति, अर्थशास्त्र, साहित्य।

Nobel award winner laureates-year 2017

Divyansh Srivastava
Student, La Martiniere College, Lucknow-226001, U.P., India
divyansh_21@hotmail.com

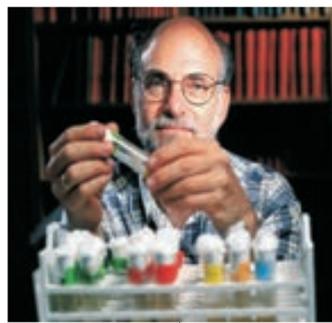
Abstract- The short description of Nobel award winner laureates and their contributions for the year 2017 in the areas of Medicine, Physics, Chemistry, Peace, Economics and Literature is given in the present article.

Key words- Nobel award winner laureates, Medicine, Physics, Chemistry, Peace, Economics and Literature.

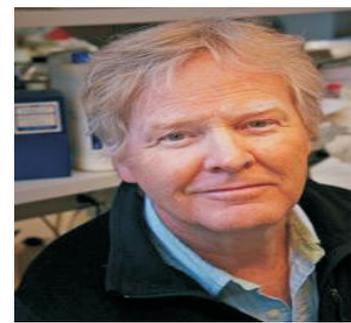
1. **चिकित्सा के क्षेत्र में-** वर्ष 2017 में चिकित्सा के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंस द्वारा नियुक्त नोबेल एसेम्बली ने केरोलिन्स्का इंस्टीट्यूट, स्वीडन, में दिनांक: 02.10.2017 को तीन अमेरिकी आनुवंशिक वैज्ञानिकों जेफरी सी0 हॉल, यूनिवर्सिटी ऑफ मेन; माइकल रोजबश, ब्रैन्डीज यूनिवर्सिटी तथा माइकल डब्ल्यू0 यंग, रॉकफेलर यूनिवर्सिटी, को उनके उल्लेखनीय शोध कार्य "फॉर देयर डिसकवरीज ऑफ मॉलिक्यूलर मिकेनिज्म कन्ट्रोलिंग दि सरकेडियन रिदम" के लिए संयुक्त रूप से चुना गया। सरकेडियन रिदम को आंतरिक जैविक डायल या घड़ी के नाम से भी जाना जाता है। इन वैज्ञानिकों की खोज में इस बात की व्याख्या की गई है कि पौधे, जानवर और मानव किस प्रकार अपनी आंतरिक जैविक घड़ी के अनुरूप स्वयं को ढालते हैं जिससे वे धरती की परिक्रमा के अनुसार अपने आप को ढाल सकें। यह आंतरिक जैविक घड़ी सोने-जागने के चक्र को समझने के अतिरिक्त खानपान, हार्मोन और शरीर के तापमान को निर्धारित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।



जेफरी सी0 हॉल
(जन्म-1945, न्यूयॉर्क, यू0एस0ए0)



माइकल रोजबाश
(जन्म-1944, कन्सास सिटी, मिस्सूरी, यू0एस0ए0)



माइकल डब्ल्यू0 यंग
(जन्म-1949, मियामी, फ्लोरिडा, यू0एस0ए0)

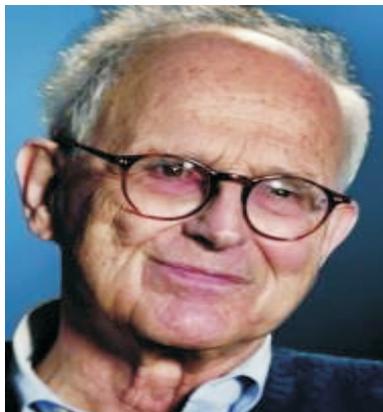
अमेरिकी आनुवंशिकविद् व क्रोनोबायोलॉजिस्ट जेफरी सी0 हॉल ने सन् 1971 में आनुवंशिकी में अपनी पी-एच0डी0 यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन से प्राप्त की। तत्पश्चात् उन्होंने सन् 1974 में यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रैन्डीज में फ़ैकल्टी के रूप में कार्य करना प्रारम्भ किया। उनके शोध कार्य का केन्द्र तन्त्रिका विज्ञान एवं *ड्रोसोफिला मेलानोगास्टर* (फ़ूट प्लाई) के व्यवहार पर था। उन्होंने जीवनपर्यन्त प्लाई कोर्टशिप के तन्त्रिका घटक तथा व्यवहारिक लय के परीक्षण पर कार्य किया। उन्होंने *ड्रोसोफिला* पर किये गये अपने कार्य के द्वारा जैविक घड़ी की आवश्यक क्रियाविधि पर से पर्दा उठाया तथा

तंत्रिका तंत्र में योनांतर के आधार पर प्रकाश डाला। जेफरी सी0 हॉल को जेनेटिक्स सोसायटी ऑफ अमेरिका मेडल(वर्ष-2003), लूइसिया ग्रॉस हॉरविट्ज पुरस्कार(वर्ष-2011), कनाडा गाइर्डनर इण्टरनेशनल अवार्ड(वर्ष-2012), शॉ पुरस्कार(वर्ष-2013), वाईली पुरस्कार(वर्ष-2013) प्राप्त हैं। सेवानिवृत्ति के उपरांत जेफरी सी0 हॉल मेन, यू0एस0ए0 में निवास कर रहे हैं।

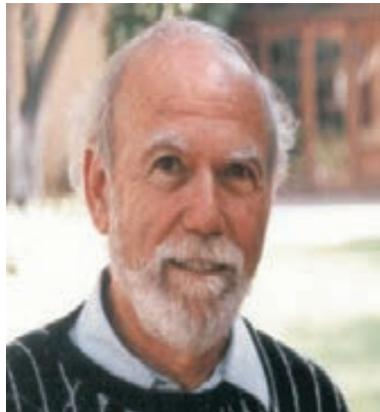
अमेरिकी आनुवंशिकविद् व क्रोनोबायोलॉजिस्ट माईकल मॉरिस रोजबाश ने ब्रैन्डीज यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर तथा हॉवर्ड ह्यूज मेडिकल सेंटर में शोध पर्यवेक्षक के रूप में कार्य किया। रोजबाश ने सन् 1970 में प्रोफेसर शैल्डन पेनमॉन के निर्देशन में एम0आई0टी0 से बायोफिजिक्स में पी-एच0डी0 प्राप्त की। उनके शोध समूह ने सन् 1984 में *ड्रोसोफिला* पीरियड जीन का क्लोन बनाया तथा सन् 1990 में सरकेडियन घड़ी के ट्रांसक्रिप्शन ट्रांसलेशन निगेटिव फीडबैक का प्रस्ताव दिया। सन् 1998 में उनके द्वारा अग्रिम आनुवंशिकी का उपयोग करके जीन चक्र, जीन घड़ी तथा *ड्रोसोफिला* में क्रिप्टोक्रोम फोटोरिसेप्टर की खोज की गई। सन् 2003 में इन्हें नेशनल एकेडेमी ऑफ साइंसेज का मानद सदस्य चुना गया। रोजबाश को एन.आई.एच. रिसर्च कैरियर डेवेलपमेंट पुरस्कार(वर्ष 1976-1980), काल्टेक डिस्टिग्विश्ड एल्युमिनी पुरस्कार(वर्ष-2001), एस्कोफ्स रूल पुरस्कार(वर्ष-2008), गुबर प्राइज इन न्यूरोसाइंस(वर्ष-2009), लूइसिया ग्रॉस हॉरविट्ज प्राइज फ्रॉम कोलम्बिया यूनिवर्सिटी(वर्ष-2011), कनाडा गाइर्डनर इण्टरनेशनल अवार्ड(वर्ष-2012), मैग्ने पुरस्कार(वर्ष-2012), शॉ पुरस्कार(वर्ष-2013), बारहवां वार्षिक वाईली प्राइज इन बायोमेडिकल साइंसेज(वर्ष-2013) प्राप्त हैं।

अमेरिकी आनुवंशिकविद् व क्रोनोबायोलॉजिस्ट माईकल डब्ल्यू0 यंग ने सन् 1975 में आनुवंशिकी में अपनी पी-एच0डी0 यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास, ऑस्टिन, यू0एस0ए0, से प्राप्त की। यंग ने अपने तीन दशकों से ज्यादा के शोध कार्य के दौरान *ड्रोसोफिला मेलानोगास्टर* के अंतर्गत सोने और जगने के आनुवंशिकी आधारित नियंत्रित पैटर्न का अध्ययन किया। रॉकफैलर यूनिवर्सिटी में किये गये उनके शोध कार्य के दौरान, उनकी प्रयोगशाला ने क्रोनोबायोलॉजी के अंतर्गत सरकेडियन लय के लिए जिम्मेदार आंतरिक जैविक घड़ी को निर्देशित करने वाले जीन का पता लगाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वह पीरियड जीन की कार्य प्रणाली को समझाने में सक्षम थे जो उड़ने वाले कीट के सामान्य निद्रा चक्र को समझने हेतु आवश्यक थी। उनकी प्रयोगशाला ने टाइमलैस और डबलटाइम जीन्स की खोज में योगदान दिया जो कि सरकेडियन लय के लिए आवश्यक प्रोटीन का निर्माण करता है। माईकल डब्ल्यू0 यंग ने आन्द्रे एण्ड बेला मेयर फाउंडेशन फेलोशिप(वर्ष-1978), एस्कोफ्स पुरस्कार(वर्ष-2006), फेलो ऑफ द अमेरिकन एकेडेमी ऑफ साइंसेज(वर्ष-2007), फेलो ऑफ द अमेरिकन एकेडेमी ऑफ माइक्रोबायोलॉजी(वर्ष-2007), गुबर प्राइज इन न्यूरोसाइंस(वर्ष-2009), लूइसिया ग्रॉस हॉरविट्ज प्राइज फ्रॉम कोलम्बिया यूनिवर्सिटी(वर्ष-2011), मैग्ने पुरस्कार(वर्ष-2012), कनाडा गाइर्डनर इण्टरनेशनल अवार्ड(वर्ष-2012), शॉ पुरस्कार(वर्ष-2013), बारहवां वार्षिक वाईली प्राइज इन बायोमेडिकल साइंसेज(वर्ष-2013) प्राप्त हैं। तीनों वैज्ञानिकों को 10 दिसम्बर, 2017 को स्वीडन में सम्पूर्ण पुरस्कार राशि (9 मिलियन स्वीडिश क्रोनर या 90 लाख स्वीडिश क्रोनर या करीब 7 करोड़ बीस लाख रुपये) का बराबर-बराबर एक तिहाई हिस्सा यानि लगभग 2 करोड़ चालीस लाख रुपया प्राप्त होगा। दुर्भाग्यवश आज तक किसी भी भारतीय जीव विज्ञानी को सिकित्सा का नोबेल पुरस्कार प्राप्त नहीं हुआ है।^{1,2}

2. भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में- वर्ष 2017 में भौतिक विज्ञान में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार रॉयल स्वीडिश एकेडेमी ऑफ साइंस द्वारा लिगो/वर्गो(LIGO/VIRGO) कोलेबोरेशन, मैसाक्यूसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी(एम0आई0टी0), कैम्ब्रिज, एम0ए0, यू0एस0ए0, के तीन भौतिकविदों रायनर वीज, बैरी सी0 बरीश, किप एस0 थोर्न, को संयुक्त रूप से प्रदान किये जाने की घोषणा दिनांक: 03.10.2017 को की गई। इन तीनों भौतिक शास्त्रियों को भौतिकी का नोबेल पुरस्कार उनके कार्य "फॉर डिजायनिंग कॉन्ट्रीब्यूशन्स टू दि लिगो डिटेक्टर एण्ड दि ऑब्जर्वेशन ऑफ ग्रेविटेशनल वेव्स" पर प्रदान किया गया।



रायनर वीज
(जन्म-1932, बर्लिन, जर्मनी)



बैरी सी0 बरीश
(जन्म-1936, ओमाहा, एन0ई0, यू0एस0ए0)

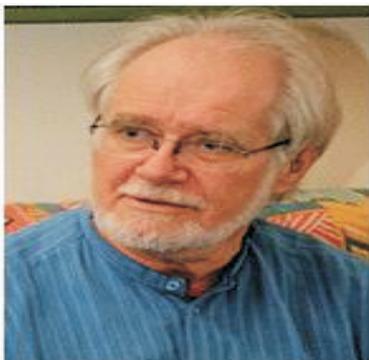


किप एस0 थोर्न
(जन्म-1940, लोगान, यू0टी0, यू0एस0ए0)

इन सभी भौतिकविद् खगोलशास्त्रियों द्वारा लेजर इंटरफेरोमीटर ग्रेविटेशनल वेव ऑब्जर्विटी(एल0आई0जी0ओ0) के क्षेत्र में कार्य किया गया है। आज से लगभग 100 वर्ष पूर्व दुनिया में अपनी रिलेटिविटी थ्योरी(सापेक्षता का सिद्धांत) के लिए प्रसिद्ध महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने गुरुत्वाकर्षण तरंगों का परिचय दिया था जिसे इन तीनों भौतिकविदों ने अपनी लिगो/वर्गो प्रयोगशाला में सामूहिक शोध से प्राप्त किया। गुरुत्वीय तरंगों को पहली बार सितंबर 2015 में और चौथी बार इस वर्ष 2017 में अगस्त में देखा गया था। इस खोज की मदद से सुदूर ब्रह्माण्ड में होने वाली गतिविधियों का पता लगाने में सरलता होगी। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि इस खोज की मदद से ब्लैक होल व न्यूट्रॉन तारों के बारे में और अधिक सूचनाएं एकत्रित की जा सकेंगी। अपने एक वक्तव्य में वीज ने बताया कि यह एक शुरुआत भर है, उनके अनुसार "ब्रह्माण्ड में बड़ी मात्रा में ऐसे पिण्ड हैं जिनसे गुरुत्वीय तरंगों का विकिरण होता है, ब्लैक होल उनमें से एक है" खगोल विज्ञान से जुड़े वैज्ञानिक बताते हैं कि इस खोज की मदद से ब्रह्माण्ड की मौलिक प्रकृति के बारे में पता लगाना संभव हो सकेगा। नोबेल समिति द्वारा यह बताया गया कि पृथ्वी पर पहुँचते-पहुँचते ये तरंगें बेहद कमजोर हो जाती हैं, इसके बावजूद यह खोज खगोल विज्ञान के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगी।

रायनर वीज ने वर्ष 1962 में मैसाचूसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी(एम0आई0टी0), कैम्ब्रिज, एम0ए0, यू0एस0ए0, से पी-एच0डी0 प्राप्त की तथा प्रोफेसर के रूप में इसी संस्थान में सेवा प्रदान की। रायनर वीज के अनुसार "Space is enormously stiff. You can't squish it." अपने शोध कार्य में रायनर ने समझाया कि क्यों गुरुत्वाकर्षण तरंगों के प्रभावों को मापना एक अत्यन्त कठिन कार्य है। बैरी सी0 बरीश ने वर्ष 1962 में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, यू0एस0ए0, से पी-एच0डी0 प्राप्त की तथा प्रोफेसर के रूप में कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, पैसाडीना, यू0एस0ए0, में सेवा प्रदान की। बरीश के अनुसार "The actual size of the signal was about one thousandth the size of a proton." किप एस0 थॉर्न ने वर्ष 1965 में प्रिंसटन विश्वविद्यालय, यू0एस0ए0, से पी-एच0डी0 प्राप्त की तथा थ्योरेटिकल फिजिक्स में प्रोफेसर के रूप में कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, पैसाडीना, यू0एस0ए0, में सेवा प्रदान की। थॉर्न ने उल्लेखनीय टीम प्रयास के बारे में कहा "Huge discoveries are really the result of giant collaborations." 10 दिसम्बर, 2017 को स्वीडन में रायनर वीज को सम्पूर्ण पुरस्कार राशि (9 मिलियन स्वीडिश क्रोनर या 90 लाख स्वीडिश क्रोनर या करीब 7 करोड़ बीस लाख रुपये) का आधा यानि लगभग तीन करोड़ साठ लाख रुपये तथा बैरी सी0 बरीश व किप एस0 थॉर्न को बाकी बची आधी राशि का आधा हिस्सा यानि लगभग 1 करोड़ अरसी लाख रुपया बराबर-बराबर प्राप्त होगा।^{1,2}

3. रसायन विज्ञान के क्षेत्र में- वर्ष 2017 में रसायन विज्ञान में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंस द्वारा स्वीडन में दिनांक: 04.10.2017 को घोषित किये गये। यूनिवर्सिटी ऑफ लॉसेन, स्विटजरलैण्ड, के सेवानिवृत्त जैवभौतिकविद् व प्रोफेसर जाक्स डूबोशे, कोलम्बिया यूनिवर्सिटी, न्यूयॉर्क, यू0एस0ए0, के प्रोफेसर जोएकिम फ्रांक, एम0आर0सी0 लैबोरेट्री ऑफ मॉलिक्यूलर बायोलॉजी, कैम्ब्रिज, यू0के0, के जीवरसायनविद् रिचर्ड हेन्डरसन को रसायन विज्ञान के क्षेत्र में "फॉर डेवेलपिंग क्रायो-इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी फॉर हाई-रिजोल्यूशन स्ट्रक्चर डिटरमिनेशन ऑफ बायोमॉलिक्यूल्स इन सोल्यूशन"(क्रायो-इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी के विकास के लिए) पर अभूतपूर्व योगदान हेतु संयुक्त रूप से नोबेल पुरस्कार हेतु चुना गया। स्टॉकहोम, स्वीडन में नोबेल समिति द्वारा बताया गया कि "इस शोध के चलते शोधकर्ता बायोमॉलिक्यूल की त्रिआयामी तस्वीर प्राप्त कर सकते हैं। इस खोज ने बायोकेमिस्ट्री को एक नये स्तर पर पहुँचाया है जहाँ पर वैज्ञानिक बायोमॉलिक्यूल को बीच में ही रोक कर(फ्रीज करके) उसका गहन अध्ययन कर पायेंगे।"



जाक्स डूबोशे
(जन्म-1942, एडगल, स्विटजरलैण्ड)



जोएकिम फ्रांक
(जन्म-1940, सीगेन, जर्मनी)



रिचर्ड हेन्डरसन
(जन्म-1945, स्कॉटलैण्ड, यू0के0)

वैज्ञानिकों ने विकसित माइक्रोस्कोप से प्रोटीन और अन्य अणुओं को जमी हुई(फ्रोजेन) अवस्था में लाकर चित्र लिया गया ताकि उनके प्राकृतिक आकार को बनाये रखा जा सके। इससे जीवन की जटिल रचनाओं के बारे में बेहतर तरीके से समझा जा सकेगा। इस शोध से पहले तक इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप से केवल मृत पदार्थ के ही चित्र लिये जा सकते थे क्योंकि इलेक्ट्रॉन किरण जैविक पदार्थों को नष्ट कर देती हैं। क्रायो-इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी के द्वारा जीका विषाणु की

सतह पर उपस्थित उस प्रोटीन का चित्र लेना भी संभव हुआ जो इसे दवा प्रतिरोधी बनाते हैं। जीव अणु की त्रिआयामी तस्वीर प्राप्त करने की सुविधा के चलते भविष्य में अनेक रोगों से पार पाने में सक्षम दवाएं विकसित की जा सकेंगी। इन तीनों रसायनविदों को 10 दिसम्बर, 2017 को स्वीडन में सम्पूर्ण नोबेल पुरस्कार राशि (9 मिलियन स्वीडिश क्रोनर या 90 लाख स्वीडिश क्रोनर या करीब 7 करोड़ बीस लाख रुपये) का बराबर-बराबर एक तिहाई हिस्सा यानि लगभग दो करोड़ चालीस लाख रुपये बराबर-बराबर प्राप्त होंगे।^{1,2,3}

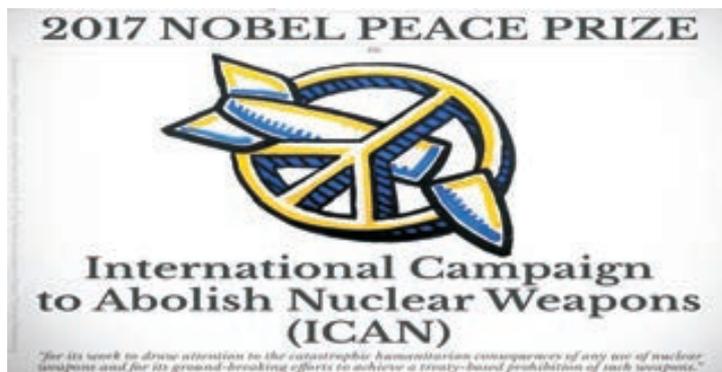
4. साहित्य के क्षेत्र में- वर्ष 2017 में साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार हेतु रॉयल स्वीडिश एकेडमी द्वारा दिनांक: 05.10.2017 को 62 वर्षीय जापानी मूल के ब्रिटिश, उपन्यासकार व लेखक काजुओ इशिगुरो को उनके उल्लेखनीय कार्य "हू, इन नॉवेल्स ऑफ ग्रेट इमोशनल फोर्स, हैज अनकवर्ड दि एबायस बिनीथ अवर इल्यूजरी सेंस ऑफ कनेक्शन विद दि वर्ल्ड" के लिए चुना गया। इशिगुरो पाँच वर्ष की उम्र में अपने माता-पिता के साथ नागासाकी, जापान से ब्रिटेन चले गये थे और वयस्क होने पर उन्होंने पुनः जापान की यात्रा की।



काजुओ इशिगुरो(जन्म-1954, नागासाकी, जापान)

आठ किताबों के लेखक इशिगुरो अपनी कृति "रिमेन्स ऑफ दि डे"(1989) के प्रकाशन के उपरांत विश्व पटल पर अपनी सफल पहचान बना पाने व अपार ख्याति प्राप्त करने में सफल हुए थे। सन् 1993 में इस उपन्यास पर बनी फिल्म में मशहूर कलाकारों एंथनी हॉपकिंस व एम्मा थॉम्पसन ने अभिनय किया था। यह फिल्म आठ अकादमी पुरस्कारों से पुरस्कृत हुई थी। वर्ष 1989 में उन्हें बुकर पुरस्कार प्राप्त हुआ था। इस उपन्यास के मुख्य चरित्र स्टीवेंस के माध्यम से मानवीय गरिमा, सामाजिक मर्यादाएं, राजनीतिक निष्ठा, प्रेम-सम्बन्ध, स्मृतियाँ, संभावनाएं, यथार्थजन्य संजीदगी जैसे विषयों को प्रमुखता से उभारा गया है। पेशे से बटलर स्टीवेंस अपने व्यवसायिक अनुभवों और विशेष रूप से पूर्व सहकर्मी के साथ रहे प्रेम-सम्बन्ध को दैनंदिनी के माध्यम से प्रस्तुत करता है।¹ रॉयल स्वीडिश एकेडमी की स्थायी सचिव सारा डेनियस के अनुसार- "वह ब्रिटिश उपन्यासकार जेन ऑस्टिन और जर्मन भाषा के लघु कथाकार फ्रेंज काफका का मिश्रण है। इन दोनों की सृजनात्मक क्षमता और समझ को मिलाने पर इशिगुरो का चेहरा सामने आता है। 62 वर्ष के इस लेखक ने शानदार भावनात्मक प्रभाव वाले उपन्यासों में दुनिया के साथ हमारे जुड़ाव की अवास्तविक भावना के नीचे के शून्य को दिखाया है। इशिगुरो को सर्वाधिक जिन विषयों से जोड़ा जाता है वे यहाँ पहले से ही उपस्थित हैं- स्मृति, समय और आत्म विमोह।" इशिगुरो ने 1980 के दशक के दौरान अपने उपन्यासों "ए पेल व्यू ऑफ दि हिल्स"(1982), "एन आर्टिस्ट ऑफ दि फ्लोटिंग वर्ल्ड"(1986), "रिमेन्स ऑफ दि डे"(1989) के माध्यम से साहित्य जगत में अपनी उपस्थिति अंकित करानी प्रारम्भ की थी। उनकी अन्य पुस्तकें "दि अंकन्सोल्ड"(1995), "क्लेन वी वेयर ऑफर्न्स"(2000), "नेवर लेट मी गो"(2005) तथा "दि बरीड ज्वाइंट"(2015) हैं। उनकी पुस्तकों/उपन्यासों पर आधारित कहानियों पर कई हॉलिवुड फिल्में व टी0वी0 शो बने हैं और व्यवसायिक रूप से सफल भी रहे हैं। काजुओ इशिगुरो को नोबेल पुरस्कार की सम्पूर्ण राशि(9 मिलियन स्वीडिश क्रोनर या 90 लाख स्वीडिश क्रोनर या 11 लाख डॉलर या करीब 7 करोड़ बीस लाख रुपये) व एक प्रतीक चिन्ह प्रदान किया जायेगा।^{1,2}

5. शांति के क्षेत्र में- वर्ष 2017 में शांति के नोबेल पुरस्कार हेतु दिनांक: 06.10.2017 को नॉर्वेजियन नोबेल समिति, ओस्लो, नॉर्वे, के अध्यक्ष बेरिट रीज एण्डरसन द्वारा विश्व में एन्टी न्यूक्लियर अभियान चलाने वाली संस्था "इन्टरनेशनल कैम्पेन टू एबॉलिश न्यूक्लियर वीपन्स(आई0सी0ए0एन0)" को चुना गया। आई0सी0ए0एन0 को शांति का नोबेल पुरस्कार विश्व में परमाणु हथियारों के प्रयोग के बाद उत्पन्न होने वाली भयावह परिस्थितियों से अवगत कराने के लिए उसके प्रयासों के चलते दिया गया है। बेरिट रीज एण्डरसन द्वारा अपने वक्तव्य में यह भी बताया गया कि हम इस पुरस्कार के माध्यम से सभी परमाणु सम्पन्न देशों को यह संदेश प्रेषित करना चाहते हैं कि यदि वे परमाणु हथियारों का प्रयोग करते हैं तो यह कितना विनाशकारी सिद्ध हो सकता है। इन्टरनेशनल कैम्पेन टू एबॉलिश न्यूक्लियर वीपन्स(आई0सी0ए0एन0) सौ से अधिक देशों में काम करने वाली गैर सरकारी संस्थाओं का एक समूह है। इसका प्रारम्भ ऑस्ट्रेलिया में हुआ था तथा 30 अप्रैल, 2007 को विएना, ऑस्ट्रिया, में इसे औपचारिक रूप से शुरू किया गया। स्वीडन की बीट्रिस फिहन इसकी प्रमुख हैं।



विश्व के 101 देशों के 468 संगठन इस संस्था से जुड़कर कार्य कर रहे हैं। इस संस्था का मुख्यालय जिनेवा, स्विट्जरलैण्ड में है। भारत के तीन संगठन इंडियन डॉक्टर्स फॉर पीस एण्ड डेवलेपमेंट, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पीस, डिसआर्नामेंट और एनवायरन्मेंट प्रोटेक्शन, पॉपुलर एजुकेशन एण्ड एक्शन सेंटर, आईकैन से जुड़े हैं। भारत में मदर टेरेसा(1979) और कैलाश सत्यार्थी(2014) को शांति का नोबेल पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। आईकैन को नोबेल पुरस्कार की सम्पूर्ण राशि(9 मिलियन स्वीडिश क्रोनर या 90 लाख स्वीडिश क्रोनर या 11 लाख डॉलर या करीब 7 करोड़ बीस लाख रुपये) के साथ एक प्रतीक चिन्ह प्रदान किया जायेगा।^{1,2}

6. अर्थशास्त्र के क्षेत्र में-



रिचर्ड एच० थालर
(जन्म-1945, ईस्ट ऑरिन्ज, न्यू जर्सी, यू०एस०ए०)

वर्ष 2017 में, अल्फ्रेड नोबेल की स्मृति में अर्थशास्त्र विज्ञान के लिए प्रदान किया जाने वाला सर्वेरेजेस रिक्सबैंक पुरस्कार 72 वर्षीय अमरीकी अर्थशास्त्री प्रोफेसर रिचर्ड एच० थालर, शिकागो विश्वविद्यालय, शिकागो, यू०एस०ए०, को उनके उत्कृष्ट कार्य "फॉर हिज कॉन्ट्रीब्यूशन्स टू बिहेवियरल इकोनॉमिक्स"(व्यवहारिक अर्थशास्त्र में किये गये उनके योगदान पर) हेतु चुना गया। रॉयल नोबेल समिति मुख्य सचिव प्रोफेसर गोरान के० हैनसन ने स्टॉकहोम, स्वीडन, में अर्थशास्त्र के नोबेल पुरस्कार की घोषणा दिनांक: 09.10.2017 को की। उनके कथनानुसार थालर का अध्ययन बताता है कि किस प्रकार समिति तर्कसंगतता, सामाजिक वरीयता और स्व-नियंत्रण की कमी जैसे मानवीय लक्षण किसी व्यक्ति के निर्णय को प्रक्रियागत तौर पर प्रभावित करते हैं तथा इससे बाजार के लक्षण पर भी प्रभाव पड़ता है। वर्ष 1987 में केस वेस्टर्न रिजर्व यूनिवर्सिटी से उन्होंने बैचलर की डिग्री प्राप्त की और इसके बाद वह रोशेस्टर विश्वविद्यालय गये जहाँ पर उन्होंने वर्ष 1970 में मास्टर्स की डिग्री प्राप्त की और फिर यहीं से वर्ष 1974 में पी-एच०डी० की डिग्री प्राप्त की। तत्पश्चात् वर्ष 1995 में उन्होंने शिकागो विश्वविद्यालय के शिकागो बूथ स्कूल में प्रोफेसर के रूप में अपनी सेवाएं देना प्रारम्भ किया। वर्तमान में थालर शिकागो विश्वविद्यालय में बिहेवियरल साइंस और अर्थशास्त्र के प्रोफेसर हैं। अमरीकी अर्थशास्त्री प्रोफेसर रिचर्ड एच० थालर विश्व में बिहेवियरल इकोनॉमिक्स में अग्रणी शोधकर्ता के रूप में जाने जाते हैं। बिहेवियरल इकोनॉमिक्स, आर्थिक विज्ञान का वह शोध क्षेत्र है जिसमें मनोवैज्ञानिक शोध को आर्थिक निर्णयों को लेने में प्रयोग किया जाता है। इससे इस बात का भी पता चलता है कि वास्तविक रूप से लोग आर्थिक निर्णय लेते समय कैसे सोचते हैं और किस प्रकार का व्यवहार दर्शाते हैं। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि थालर को अर्थशास्त्र और मनोविज्ञान के साथ जोड़कर किये गये कार्य और उसके लोगों पर किये गये सफल प्रयोगों के कारण नोबेल पुरस्कार हेतु चुना गया। थालर द्वारा प्रेस को दिये गये अपने वक्तव्य में कहा गया है कि "हमारे शोध ने पेंशन प्रणाली को दुनिया भर में बहुत हद तक बदल कर रख दिया है।"

परम्परागत आर्थिक सिद्धांत में यह माना जाता है कि उपभोक्ता हमेशा समझदारी से फैसले लेता है। थालर ने इस मान्यता को खारिज किया है। वर्ष 2008 में "नज" नामक पुस्तक लिखने वाले अमेरिकी अर्थशास्त्री का मानना है कि लोग कभी-कभी विवेक को परे रखकर भी आर्थिक फैसले लेते हैं। उनके द्वारा लिखी गई अन्य प्रमुख पुस्तकें "द साइकोलॉजी ऑफ च्वाइस एण्ड द एजम्पशन्स ऑफ इकोनॉमिक्स"(1987), "कॉजी रेशनल इकोनॉमिक्स"(1991), "द विनर्स कर्ज"(1991), "अरारा!"(2012), "मिसबिहेविंग"(2015) हैं। इस अर्थशास्त्री को नोबेल पुरस्कार राशि के तहत 9 मिलियन स्वीडिश क्रोनर या 90 लाख स्वीडिश क्रोनर या 11 लाख डॉलर या करीब 7 करोड़ बीस लाख रुपये एवं एक प्रतीक चिन्ह प्रदान किया जायेगा।

उल्लेखनीय है कि विश्व के सबसे बड़े एवं प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार प्रत्येक वर्ष 10 दिसम्बर को प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्फ्रेड नोबेल की पुण्य तिथि(10 दिसम्बर, 1896) को स्वीडन में प्रदान किये जाते हैं।^{1,2}

संदर्भ

1. www.nobelprize.org
2. हिन्दी दैनिक समाचार पत्र— दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिन्दुस्तान, दिनांक: अक्टूबर 04, 05, 06, 07, 10, 2017।
3. शुक्ल, वेद मित्र(2017) इशिगुरो के गढ़े पात्रों का सम्मान, दैनिक जागरण सप्तरंग, दिनांक: 9 अक्टूबर, 2017, पृ0 2।